कांगो की घटनाओं के बारे में वक्तव्य

†**प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू)** : श्रीमान् अभी तीन या चार दिन पहले, सभा का ध्यान कांगो के लियोपोल्डविल में होने वाली कुछ घटनाओं की तरफ़ गया था, जिनमें भारत के कुछ अफ़सरों को पीटा गया था और उन को चोटें आई थीं। तब मैं ने वायदा किया था कि मैं उन के बारे में जितनी भी जानकारी हो सकेगी सभा के सामने रखूंगा। अभी इस मौके पर मैं आप के सामने उन घटनाओं का ब्यौरा पेश कर रहा हूं, पूरे कांगो के पेचीदा सवाल के बारे में कुछ भी नहीं कह रहा हूं।

कांगो के कुछ अफ़सरान ने तय किया कि घाना के एक राजनयिक अधिकारी को कांगो छोड़ने पर मजबूर किया जाये। कांगो के अफ़सरान के बारे में बात करते वक्त एक मुश्किल यह पड़ती है कि उन के बारे में ठीक ठीक नहीं बताया जा सकता कि वे बाक़ायदा अफ़सर हैं, या किसी तरह अफ़सर बन गये हैं, वे कायदे-कानून की बिना पर अफ़सर हैं। खैर जो भी हो, वे वहां अफ़सर हैं और उन्हों ने घाना के एक राजनयिक अधिकारी को कांगो छोड़ने के लिये कहा। घाना के उन अधिकारी ने उन के हुक्म की तामील नहीं की, या हो सकता है कि वह अपनी सरकार के साथ उस के बारे में लिखापढ़ी कर रहे हों। खैर उन्हों ने कांगो में मौजूद संयुक्त राष्ट्र संघ की फौजों से संरक्षण मांगा और उन की दरखास्त मान ली गई। वह उस वक्त अपने घर में थे और संयुक्त राष्ट्र संघ के कुछ सिपाही वहां पहरा दे रहे थे। उसी वक्त वहां कांगो की फौज की एक हथियारबन्द टुकड़ी पहुंची और उसने या तो हमला किया या घेरा डालना चाहा। जो भी हो, संयुक्त राष्ट्र संघ के सैनिकों और कांगो के सैनिकों के बीच गोली चली, जिस का नतीजा यह हुआ कि चार, पांच या शायद छै सैनिक मारे गये। उन में कांगो की हथियारबन्द फौज का एक अफ़सर---कर्नल एनकोकुलु---भी था, जो कर्नल मोबुटू के बाद सब से बड़ा फौजी अफ़सर था। जाहिर है कि उस के मारे जाने से कांगो की हथियारबन्द फौजों में बड़ा गुस्सा फैल गया।

मैं पहले भी बता चुका हूं कि कांगो में हम ने जो भारतीय सैनिक भेजे हैं वे लड़ाई में हिस्सा लेने वाले सैनिक नहीं हैं। गोलीबारी की इस वारदात में भी भारतीय सैनिक शामिल नहीं थे। हम ने वहां जो भारतीय अधिकारी व सैनिक भेजे हैं, वे हैं तो फौज के ही, लेकिन वे रसद पहुंचाने, सिगनल देने और दवा-दारू का काम ही कर रहे हैं। हमने कांगो में एक बड़ा अस्पताल खोला है। वहां हमारे करीब ७७० आदमी हैं।

इन वारदातों के बाद, २१ नवम्बर के बाद से, कांगो के फौजियो ने इधर उधर लोगों पर और कई देशों के राजनयिक अधिकारियों पर छुट-पुट हमले किये हैं। २१, २२ और २३ नवम्बर को ऐसे कई हमले हुए थे। मैं उन की कुछ ही मिसालें आप को बताता हूं, जिससे आप अन्दाज़ा लगा सकें कि वे किस तरह की थीं। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव को एक रिपोर्ट दी गई है, और उन्होंने उसे संयुक्त राष्ट्र संघ के सामने रख दिया था। ये मिसालें उसी रिपोर्ट से ली गई हैं।

इस में वे मिसालें नहीं दी गई हैं जिन में ज्यादा हिंसा नहीं हुई। मिसालें सिर्फ उन घटनाओं की दी गई हैं, जिन में वाकई कोई हिंसा हुई है या हिंसा की धमकी दी गई है। कांगो के फौजियों ने वहां लोगों को धमका कर, उन की बहुत सी मोटर गाड़ियां जबरन् छीन ली हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, छीनी गई मोटरों की तादाद ४०–५० या शायद ७० है। कहा तो गया था कि बाद में उन को लौटा दिया जायेगा, लेकिन शायद ज्यादातर मोटरें लौटाई नहीं गई हैं।

---

†मूल अंग्रेजी में

भारतीय अफसरों के साथ जो हुआ, उस की मिसाल सभा के सामने है ही। हमारे दो अफसरों को बुरी तरह पीटा गया था, और हमारे दूसरे तीन अफसरों को पीटा तो नहीं गया था, लेकिन उन को ढकेल कर अपनी-अपनी कारें और अपनी कुछ चीजें देने पर मजबूर किया गया था।

इसके अलावा, कुछ और भी मिसालें हैं। कांगो के फौजियों ने २१ नवम्बर की रात को संयुक्त राष्ट्रसंघ के गैर-फौजी अफसरों की एक कार रोक ली थी। उन में एक स्विटजरलैण्ड, दूसरा स्वीडन और तीसरा फ्रांस का था। उनको बन्दूक दिखा कर कार छोड़ देने के लिये मजबूर किया गया, फिर राइफिलों के कुंदों से उन को पीटा गया और बाद में संयुक्त राष्ट्र संघ के २४ दूसरे कर्मचारियों के साथ, जिन में दो औरतें भी थीं, एक छोटे से कमरे में बन्द कर दिया गया था। उन को आठ घंटे बाद रिहा किया गया था। संयुक्त राष्ट्र के चार गैर-फौजी अफसरों को रिहा करने के बाद भी पीटा गया था और उनकी कारें चुरा ली गई थीं।

उसी रात एक और कार रोकी गई थी। उस में एक कनाडा, दूसरा स्पेन और तीसरा अमरीका का था। संयुक्त राष्ट्र के उन तीनों गैर-फौजी कर्मचारियों को जबरन रोक कर रखा गया और पीटा गया। सुबह उन को रिहा किया गया था।

संयुक्त राष्ट्र के दो गैर-फौजी कर्मचारी भी, जो इटली के रहने वाले हैं, उसी रात कार सहित रोके गये थे और राइफिल के कुन्दों से उन की पिटाई होने के बाद, चार घंटे बाद रिहा कर दिये गये थे।

२२ की सुबह कनाडा की हवाई फौज के एक अधिकारी की कार रोकी गई और उसे बन्दूक दिखा कर नीचे उतारा गया और बाद में कई बार पीटा गया। उस के कागजात चुरा लिये गये।

उसी दिन सुबह इंगलैण्ड के एक घाना निवासी अधिकारी की कार चोरी चली गई। उन को राइफिल के कुन्दों से पीटा गया। उन की घड़ी चुरा ली गई और पांच घंटे तक हिरासत में रखा गया था। यह भी तब जबकि कर्नल मोबुटू ने उनकी रिहाई का हुक्म दे दिया था।

आप देखिये कि कितने देशों के लोगों पर हमले हुए थे। संयुक्त राष्ट्र के एक गैर-फौजी कर्मचारी को, जो स्वीडन का रहने वाला था, गिरफ्तार कर के पांच घंटे हिरासत में रखा गया और उस बीच बार-बार उसे बन्दूकों और चाकुओं से धमकियां दी गईं।

२२ नवम्बर को, कांगो के हथियारबन्द फौजियों ने नाइजीरिया के एक बड़े अफसर, जो इंगलैंड के रहने वाले हैं, और दो भारतीय नॉन कमीशन्ड आफीसरों (एन सी ओ) को जीप से उतरने पर मजबूर किया। दोनों भारतीयों को मौत की धमकियां दी गईं, लेकिन कुछ देर बाद रिहा कर दिया गया था।

हालैंड के रहने वाले, संयुक्त राष्ट्र के एक गैर-फौजी अधिकारी को धमकी दी गई थी कि अगर वह कांगों रेडियो स्टेशन लौट कर जायेगा, तो उसे जान से मार डाला जायेगा।

२३ नवम्बर को, कनाडा की हवाई फौज के एक बड़े अफसर को बन्दूक दिखाकर कार से उतारा गया और उसकी कार चुरा ली गई।

ये सभी हमले निहत्थे लोगों पर हुए थे। हो सकता है कि कुछ लोगों के पास रिवाल्वर रहे भी हों। पर वे हथियारबन्द नहीं थे।

हाल में तीन और घटनायें हुई हैं। २२ की सुबह, एक भारतीय आई० आर० आर० को हवाई अड्डे के रास्ते में रोक कर लूटा गया। दो भारतीय फौजी पुलिस के अधिकारियों ने, जो एक

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

नाईजीरियाई ब्रिगेडियर को हवाई अड्डे तक छोड़ने जा रहे थे, एक ग़लत मोड़ पर जैसे ही गाड़ी घुमाई, उनको कांगो के फौजियों ने रोक लिया और उनकी पिस्तौल तथा दो स्टेन गनें छीन लीं। २७ की शाम को मरीजों को ले जाने वाली एक भारतीय एम्बुलेंस को रोक लिया गया। कांगो के फौजी उसे छीनकर ले गये। ये वाकयात हैं।

मोटे तौर पर २३ के बाद से ऐसी घटनायें होना बन्द हैं। हां, उसके बाद एम्बुलेंस-कार की चोरी की घटना जरूर हुई है। कहा जाता है कि २४ नवम्बर के बाद से अब लियोपोल्डविल में पहले के मुकाबले ऐसी सरगर्मी नहीं है। जिन दो भारतीय अफसरों को चोटें आई थीं, वे अस्पताल से वापस आ गये हैं।

हमलों की वारदातें कम होने और हालात में कुछ सुधार होने के कारण ये बताये जाते हैं :— (१) लियोपोल्डविल में संयुक्त राष्ट्र की फौजों की गश्त बढ़ गई है; (२) संयुक्त राष्ट्र के कर्मचारियों को आमतौर पर कम निकलने दिया जाता है, खास तौर से रात में; (३) लियोपोल्डविल में संयुक्त राष्ट्र कमीशन ने कर्नल मोबुटू पर दबाव डाला है; (४) न्यूयार्क में प्रेसीडेण्ट कासावुबू और श्री बोम्बोको पर दबाव डाला गया है। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव ने प्रेसीडेण्ट कासावुबू के पास लिख कर शिकायत भेजी है, और उसके बाद दो बार जुबानी कहलवाया है। सलाहकार कमेटी की बैठकें होती रही हैं और उसमें उन सभी देशों के नुमाइंदे मौजूद हैं जिन्होंने कांगो में अपनी हथियारबन्द या किसी दूसरी तरह की फौजें भेजी थीं। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव ने ही यह सलाहकार कमेटी बनाई थी और उस कमेटी ने भी इस मामले पर गौर करने के बाद, प्रेसीडेण्ट कासावुबू और महासचिव दोनों से अपील की है।

ये सभी तथ्य हैं। हाल में कुछ और घटनायें भी हुई हैं। अखबारों से पता चलता है कि श्री लुमुम्बा लियोपोल्डविल की अपनी एक तरह की नजरबन्दी से भाग निकले हैं। किसी को पता नहीं वे कहां गये हैं। वे शायद स्टैनलीविल, अपने घर की तरफ जा रहे हैं। जाहिर है कि इस समय हालत काफ़ी खतरनाक है। कांगों में अभी भी गृह-युद्ध का खतरा है। वहां एक बड़े पैमाने पर विभिन्न तत्वों में गृह-युद्ध छिड़ सकता है। इतना ही नहीं, कांगो से बाहर की ताकतें भी इन विरोधी तत्वों के पीछे तैयार हैं। लेकिन अभी मैं उस बड़े सवाल को नहीं लूंगा।

†**श्री नाथवाई** (राजापुर) : प्रधान मंत्री ने पहले बताया था कि कांगो में अब सवाल है संयुक्त राष्ट्र संघ के प्राधिकार को कायम रखने का। भारत सरकार ने महासचिव को इसके बारे में लिखा है। लेकिन हम जानना चाहते हैं कि उसके विषय में हो क्या रहा है।

†**अध्यक्ष महोदय** : माननीय सदस्य उनकी सुरक्षा की गारंटी के बारे में जानना चाहते हैं।

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : गारंटी क्या हो सकती है; सिवाय इसके कि संयुक्त राष्ट्र की फौजें वहां हैं। हम इसके बारे में एक नहीं, दो बार महासचिव के पास सख्त किस्म की शिकायतें कर चुके हैं। सलाहकार कमेटी में भी इस पर गौर किया गया था। प्रेसीडेण्ट कासावुबू न्यूयार्क में थे; उन से भी इसके बारे में कहा गया था। वह सब तो किया ही गया था। साथ ही, महासचिव से बार-बार जोर देकर कहा गया और वह भी मान गये हैं कि यह मामला बड़ा गम्भीर है और हर कोशिश की जानी चाहिये।

---

†मूल अंग्रेजी में

सभा खुद देख सकती है कि २३ के बाद से वैसी घटनायें नहीं हुई हैं, इसलिये कि संयुक्त राष्ट्र की फौजों ने वहां कुछ कड़े कदम उठाये हैं। एम्बुलेंस-कार की चोरी के अलावा, तब से वैसी कोई घटना नहीं हुई है। एम्बुलेंस-कार भी लौटा देने का वायदा किया गया है।

†**श्री ब्रजराज सिंह** (फ़िरोज़ाबाद) : कर्नल मोबुटू की फौज ने हमारे कर्नल हरमानदर सिंह को अपने घर में नहीं घुसने दिया था। उनको दूसरे के घर में शरण लेनी पड़ी थी।

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : बात बिलकुल सही है। इस तरह के तथ्यों का जिक्र मैं कर चुका हूं। सभी तथ्यों को दोहराने की जरूरत नहीं। मैंने अभी सभा को बताया है कि २१ से २३ नवम्बर तक ऐसी घटनायें हुई हैं। करीब ७-८ देशों के लोगों को पीटा गया है और उनकी चीज़ें चुराई गई हैं।

†**श्री नोशीर भरूचा** (पूर्व खानदेश) : पिछली बार, सरकार ने कहा था कि इस पर चर्चा होगी। आपने भी कहा था कि इसी हफ्ते में इस पर वाद-विवाद होगा। उसके बाद से प्रधान मंत्री ने काफी चिन्ताजनक बातें कही हैं। उन्होंने साफ़ कहा है कि श्री लुमुम्बा स्टैनिलेविल की तरफ बढ़ रहे हैं और इससे वहां गृह-युद्ध की संभावना पैदा हो रही है। वहां हमारे ७७० कर्मचारी हैं और वे निहत्थे हैं। अब प्रश्न यह है कि क्या संसद् उनकी सुरक्षा के मसले पर चर्चा नहीं कर सकती ?

†**अध्यक्ष महोदय** : प्रधान मंत्री ने सभी तथ्य सभा के सामने रख दिये हैं। सभा को भारतीय कर्मचारियों की सुरक्षा के मसले पर चर्चा करने का अधिकार है, और उचित अवसर आने पर सभा उस पर चर्चा करेगी और सरकार को सलाह देगी। लेकिन इस अवस्था पर नहीं।

†**श्री खाडिलकर** (अहमदनगर) : क्या संयुक्त राष्ट्र से मान्यता प्राप्त, उस राज्य के प्रधान, श्री कासावुबू ने इन घटनाओं पर खेद प्रकट किया है ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : मुझे ऐसी कोई जानकारी नहीं।

†**श्री ही० ना० मुकर्जी** (कलकत्ता-मध्य) : प्रधान मंत्री ने अभी जो वक्तव्य दिया है, उसमें कुछ ऐसे तथ्य दिये गये हैं जिन से हमारे दिमाग में तरह-तरह के सवाल उठ रहे हैं। इसलिये हम चाहते हैं कि इस मामले पर चर्चा हो। प्रधान मंत्री बतायें कि वे इसके लिये तैयार हैं या नहीं ?

†**श्री रंगा** (तेनालि) : अच्छा तो यह होगा कि हम इस पर सभा में चर्चा करने की बजाय संयुक्त राष्ट्र और उसके महासचिव के सामने अपना प्रतिनिधित्व करें।

†**श्री जाहरवलाल नेहरू** : संसद् इस पर चर्चा कर सकती है या नहीं—इसका सवाल ही नहीं उठता। सभा को पूरा-पूरा हक़ है। हां, सोचना यही है कि ऐसी चर्चा करना ठीक रहेगा या नहीं।

जहां तक इन घटनाओं का ताल्लुक है, वहां तो शुरू से बदअमनी और बदइंतजामी रही है। कांगो के बड़े सवाल के अलावा, एक और सवाल हमेशा रहा है। वह यह कि वहां कुछ सुरक्षा की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिये। लेकिन हम अपने साढ़े सात सौ कर्मचारियों के लिये सुरक्षा की मांग करते नहीं फिर सकते। वह न तो जरूरी है और न अच्छा ही लगता है कि हम अपने कर्मचारियों के लिये ऐसी मांग करते फिरें। वे अपनी देखभाल खुद कर सकते हैं। वहां संयुक्त राष्ट्र की तरफ से १५ देशों के लोग गये हैं, और अगर सभी चौकीदार पुलिस वालों से और पुलिस वाले फौजियों से और

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

फौजी लोग किसी और से सुरक्षा मांगें, तो एक नामुमकिन सी चीज हो जाती है। हां, अगर कोई गड़बड़ी वहां हो जाये, तो हमें उसके बारे में कुछ अपना फैसला करना पड़ेगा। इसलिये मैं समझता हूं कि बदअमनी, वगैरह के बारे में चर्चा करने से कोई फायदा नहीं क्योंकि सभी मानते हैं कि बदअमनी नहीं रहनी चाहिये।

विरोधी दल के माननीय सदस्य शायद कांगो के बड़े सवाल पर चर्चा करने की बात सोच रहे हैं कि उसके बारे में हमें क्या करना चाहिये। यदि सभा चाहे तो हम उस पर चर्चा कर सकते हैं।

लेकिन कांगो के हालात इतनी तेजी से बदल रहे हैं कि अभी कुछ दिनों तक उन पर चर्चा करने से कोई फायदा नहीं होगा। मेरी तो यही राय है। अभी हम यहां बैठे-बैठे उस पर चर्चा करें तो हम या तो संयुक्त राष्ट्र संघ की कार्यवाही को बुरा बतायें, या उसकी नुक्ताचीनी करें, या फिर उसकी तारीफ करें। मैं तो यही समझता हूं कि अभी उस पर चर्चा करने से कहीं कोई फायदा नहीं होगा। बाद में अगर कुछ ऐसा हो जाये जिससे तसवीर ज्यादा साफ़ दिखने लगे, तब कुछ फायदा हो सकता है। अभी तो हालात इतने उलझे हुए, इतने पेचीदा हैं कि कोई नहीं जानता कि ऊंट किस करवट बैठने जा रहा है। वैसे हमारे ख्यालात तो सभी जानते हैं कि कांगो में अमन कायम होना चाहिये और एक केन्द्रीय हुकूमत चलनी चाहिये।

संयुक्त राष्ट्र ने अब प्रेसीडेण्ट कासावुबू को मान लिया है। हमने और दुनिया के दूसरे देशों ने भी उनको माना था। अब सवाल यह पैदा हो गया है कि प्रेसीडेण्ट के क्या काम होते हैं जो उनको करने चाहिये। क्या प्रेसीडेण्ट को अपने कामों के दायरे से बाहर जाकर भी कुछ करना चाहिये? यह सवाल अभी भी है। लेकिन कांगो की अभी तक कोई एक साफ तसवीर उभर कर नहीं आई है। हर चीज़, हर परिस्थिति में लचकीलापन है। वहां शक्लें बनती और बिगड़ती रहती हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से वहां भेजे गये हमारे और दूसरे-दूसरे देशों के नुमाइंदे इस बात को जानते हैं और अपनी पूरी कोशिशें भी कर रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र की तरफ से जो एक कमीशन जाने वाला है, वह एकाध हफ्ते में कांगो पहुंचेगा। वह शायद अपनी रिपोर्ट पेश करेगा। इसलिये ऐसी तेजी से बदलते हालात में, उस पर बहस करने से मुझे तो कोई फायदा नहीं दिखता।

†**अध्यक्ष महोदय** : कांगो में संयुक्त राष्ट्र का एक आयोग जा रहा है। हमें देखना चाहिये कि वह क्या करता है। तब तक हमें रुकना चाहिये। अभी इस पर चर्चा करने से कोई लाभ नहीं।

समवाय (संशोधन) विधेयक—जारी

†**अध्यक्ष महोदय** : अब सभा समवाय अधिनियम, १९५६ में और आगे संशोधन करने वाले विधेयक पर, संयुक्त समिति द्वारा प्रतिवेदित रूप में, खण्डवार विचार करेगी। खंड ९८ विचाराधीन है।

श्री रामसिंह भाई वर्मा (निमाड़) : श्रीमन्, कल मैं यह निवेदन कर रहा था कि कांग्रेस-विरोधी पार्टियों को कम्पनियों से किस प्रकार से चन्दा दिया जाता है, किस मकसद के लिए दिया

---

†मूल अंग्रेजी में